अध्याय 6: नेताजी का चश्मा

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 14 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1	प्रश्न-अभ्यास	5 प्रश्न
प्रश्नावली 6.2	रचना और अभिव्यक्ति	6 प्रश्न
प्रश्नावली 6.3	भाषा-अध्ययन	3 प्रश्न

प्रश्नावली 6.1 — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

हल

कैप्टन चश्मेवाला एक साधारण गरीब फेरीवाला था — लँगड़ा, बूढ़ा, मरियल — जो सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए चश्मे बेचता था।
उसकी कोई पक्की दुकान भी नहीं थी।
पर उसके मन में नेताजी सुभाषचंद्र बोस के प्रति गहरी श्रद्धा और देशभक्ति की भावना थी।
उसे नेताजी की बिना चश्मेवाली मूर्ति बुरी लगती थी — मानो चश्मे के बिना नेताजी को असुविधा होती हो।
इसलिए वह अपनी छोटी-सी दुकान के गिने-चुने फ्रेमों में से एक नेताजी की मूर्ति पर लगा देता था, और जब कोई ग्राहक वैसा ही फ्रेम माँगता तो मूर्तिवाला फ्रेम उतारकर उसे दे देता और नेताजी को बाद में दूसरा लगा देता।
यह देशभक्ति का अनोखा और असाधारण व्यवहार था।
लोगों ने उसकी इसी देशभक्ति और समर्पण-भाव की पहचान 'कैप्टन' के रूप में की होगी — एक अनकहा सम्मान।
वस्तुतः 'कैप्टन' उसका वास्तविक नाम नहीं, बल्कि उसकी देशप्रेमी भावना के प्रति लोगों द्वारा दिया गया आदरपूर्ण संबोधन था।

उत्तर: कैप्टन चश्मेवाला सेनानी नहीं था, परंतु नेताजी की बिना चश्मेवाली मूर्ति उसे आहत करती थी। वह अपनी छोटी-सी दुकान से बार-बार चश्मा लगाकर मूर्ति के प्रति श्रद्धा व्यक्त करता था। इसी देशभक्ति-भावना के कारण लोग उसे 'कैप्टन' कहते थे।

प्रश्न 2

हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा — (क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे? (ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है? (ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

हल

(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?
कैप्टन चश्मेवाले की मृत्यु के बाद मूर्ति की आँखों पर लगातार दो बार भी चश्मा नहीं था।
हालदार साहब ने सोचा — कैप्टन मर गया, अब नेताजी की मूर्ति पर चश्मा नहीं होगा; क्योंकि मास्टर बनाना भूल

गया था और कैप्टन था नहीं।
उन्हें लगा कि अब कोई यह देशभक्ति का कार्य नहीं करेगा।
इसी कारण उन्होंने ड्राइवर को रोकने से मना किया — मूर्ति देखकर दुखी नहीं होना चाहते थे।

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?
मूर्ति पर किसी बच्चे ने सरकंडे से बना छोटा-सा चश्मा रख दिया था — जैसा बच्चे बना लेते हैं।
यह सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देशभक्ति की भावना केवल बड़ों या सेनानियों तक सीमित नहीं है।
बच्चे भी अपने देश और उसके नायकों के प्रति श्रद्धा रखते हैं।
समाज की नई पीढ़ी में भी राष्ट्रीय भावना जीवित है।
कैप्टन के जाने के बाद भी देशभक्ति की लौ बुझी नहीं — किसी न किसी रूप में यह परंपरा जारी रहेगी।

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?
हालदार साहब पहले से ही कैप्टन की मृत्यु और उस कौम के बारे में सोचकर दुखी थे जो देशभक्तों पर हँसती है।
उन्होंने सोचा था कि अब मूर्ति पर चश्मा कभी नहीं होगा।
लेकिन एक बच्चे के द्वारा बनाए गए सरकंडे के चश्मे ने उन्हें बता दिया कि देश में देशप्रेम अभी भी जीवित है।
यह अहसास कि हमारे देश की नई पीढ़ी में भी राष्ट्रीय चेतना है — यही भावना उनकी आँखों में आँसू ले आई।

उत्तर: (क) कैप्टन की मृत्यु के बाद मूर्ति पर चश्मा नहीं था, हालदार साहब को लगा अब यह सिलसिला खत्म हो गया। (ख) सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देशभक्ति की भावना बच्चों में भी जीवित है। (ग) बच्चे की इस छोटी-सी क्रिया ने उन्हें बता दिया कि देशप्रेम की भावना अभी मरी नहीं — यह अहसास उन्हें भावुक कर गया।

प्रश्न 3

आशय स्पष्ट कीजिए— 'बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देनेवालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।'

हल

यह कथन हालदार साहब के मन का विचार है जो पानवाले के उस व्यवहार से उत्पन्न हुआ जब पानवाले ने कैप्टन चश्मेवाले का उपहास किया था — 'वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!'
आशय —
हालदार साहब सोचते हैं कि जिस देश में ऐसे लोग हों जो देश के लिए सब कुछ न्योछावर करनेवालों का मजाक उड़ाते हों और स्वयं अपने स्वार्थ के लिए बिकने को तैयार रहते हों — उस देश का भविष्य कैसा होगा?
कैप्टन ने गरीबी में, अपाहिज होते हुए भी, नेताजी के प्रति श्रद्धा रखी — यह सच्ची देशभक्ति है।
परंतु पानवाले जैसे लोग ऐसे देशभक्तों पर हँसते हैं और स्वयं सुविधाजनक जगह पर बिकने को तैयार रहते हैं।
लेखक इस वाक्य के माध्यम से समाज की उस स्वार्थी मानसिकता पर व्यंग्य करता है जो देश-प्रेम को कमजोरी या पागलपन मानती है।
यह चिंतन देश के नैतिक पतन पर एक गहरी टिप्पणी है।

उत्तर: हालदार साहब का आशय है — जो समाज देश के लिए सब कुछ बलिदान करनेवाले निस्स्वार्थ देशभक्तों का उपहास करे और स्वयं अपने स्वार्थ के लिए बिकने को तैयार रहे, उस समाज का भविष्य अंधकारमय है। यह व्यंग्य स्वार्थी और कृतघ्न समाज पर है।

प्रश्न 4

पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

हल

कहानी में पानवाले का जो चित्र उभरता है वह इस प्रकार है —
शारीरिक विशेषताएँ —
पानवाला एक काला, मोटा और खुशमिजाज आदमी था।
उसकी तोंद थी जो बातों के बीच थिरकती थी।
उसके दाँत पान खाने से लाल-काले हो गए थे (लाल-काली बत्तीसी)।
वह हमेशा अपने मुँह में पान ठूँसे रहता था।

स्वभाव —
वह हँसमुख और बातूनी था — आँखों-ही-आँखों में हँसता था।
वह व्यावहारिक और चालाक था — ग्राहकों को अच्छी तरह जानता था।
वह कैप्टन जैसे लोगों का मजाक उड़ाता था — 'वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!'
परंतु जब कैप्टन की मृत्यु हुई, तो वही पानवाला उदास हो गया, सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछने लगा।
यह दर्शाता है कि हँसी-मजाक के पीछे उसके दिल में भी एक कोमल भाव था।

सामाजिक भूमिका —
पानवाला उस कस्बे का एक साधारण दुकानदार था जो सूचना-केंद्र की भूमिका भी निभाता था — हालदार साहब को कैप्टन के बारे में उसी से पता चला।

उत्तर: पानवाला एक काला, मोटा, खुशमिजाज आदमी था जिसकी तोंद थिरकती थी और दाँत पान खाने से लाल-काले थे। वह बातूनी और हँसमुख था, कैप्टन का मजाक उड़ाता था; परंतु कैप्टन की मृत्यु पर उसकी आँखें भर आईं — भीतर से कोमल था।

प्रश्न 5

'वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल!' कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

हल

पानवाले की यह टिप्पणी उसकी सतही सोच और कैप्टन के प्रति उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण को दर्शाती है।
पानवाला कैप्टन को केवल उसकी शारीरिक अक्षमता (लँगड़ापन) और गरीबी के कारण तुच्छ समझता है।
परंतु वास्तव में कैप्टन चश्मेवाला उससे कहीं बड़ा इंसान था —

1. वह अपनी सीमित सामर्थ्य में भी नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाकर देशभक्ति व्यक्त करता था।
2. उसने नेताजी के सम्मान के लिए अपनी आजीविका (बिक्री के फ्रेम) का त्याग किया।
3. देश-सेवा केवल फ़ौज में जाने से नहीं होती — अपने-अपने स्तर पर राष्ट्र के प्रतीकों का सम्मान करना भी देशभक्ति है।

पानवाले की टिप्पणी हमें बताती है कि समाज में ऐसे लोग होते हैं जो बाहरी रूप-रंग देखकर आकलन करते हैं, परंतु किसी की आंतरिक भावना और समर्पण को नहीं देख पाते।

कैप्टन की देशभक्ति पानवाले की हँसी से नहीं, बल्कि उसकी निःस्वार्थ सेवा से परिभाषित होती है।

उत्तर: पानवाले की यह टिप्पणी संकीर्ण सोच का परिचय देती है। देशभक्ति केवल फ़ौज में जाने से नहीं होती; कैप्टन ने अपनी सीमित शक्ति में जो किया, वह सच्ची देशभक्ति थी। शारीरिक अक्षमता को आधार बनाकर किसी की भावना का उपहास करना उचित नहीं।

प्रश्नावली 6.2 — रचना और अभिव्यक्ति

प्रश्न 6

निम्नलिखित वाक्य पात्रों की कौन-सी विशेषता की ओर संकेत करते हैं— (क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते। (ख) पानवाला उदास हो गया। उसने पीछे मुड़कर मुँह का पान नीचे थूका और सिर झुकाकर अपनी धोती के सिरे से आँखें पोंछता हुआ बोला—साहब! कैप्टन मर गया। (ग) कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।

हल

(क) हालदार साहब हमेशा चौराहे पर रुकते और नेताजी को निहारते।
यह वाक्य हालदार साहब की देशभक्ति, सौंदर्य-बोध और संवेदनशीलता को दर्शाता है।
वे व्यस्त जीवन में भी नेताजी की मूर्ति के प्रति आदर और जिज्ञासु मन रखते थे।
यह उनकी राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति आत्मीयता का परिचायक है।

(ख) पानवाला उदास हो गया...साहब! कैप्टन मर गया।
यह वाक्य पानवाले के स्वभाव की दोहरी परत को उजागर करता है।
ऊपर से वह मजाकिया और कैप्टन का उपहास करनेवाला था, परंतु कैप्टन की मृत्यु की खबर देते समय वह उदास हो गया और उसकी आँखें भर आईं।
यह उसके भीतर की कोमल मानवीय भावना को दर्शाता है।

(ग) कैप्टन बार-बार मूर्ति पर चश्मा लगा देता था।
यह वाक्य कैप्टन चश्मेवाले की अदम्य देशभक्ति, समर्पण और निःस्वार्थ भाव को रेखांकित करता है।
वह अपनी गरीबी और शारीरिक अक्षमता के बावजूद नेताजी के सम्मान के लिए बार-बार यह कार्य करता था।
यह उसके अटूट राष्ट्रप्रेम की पहचान है।

उत्तर: (क) हालदार साहब की देशभक्ति, संवेदनशीलता और राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति आत्मीयता। (ख) पानवाले की दोहरी प्रकृति — ऊपर से मजाकिया, भीतर से कोमल और संवेदनशील। (ग) कैप्टन की निःस्वार्थ, अदम्य देशभक्ति और समर्पण-भाव।

प्रश्न 7

जब तक हालदार साहब ने कैप्टन को साक्षात् देखा नहीं था तब तक उनके मानस पटल पर उसका कौन-सा चित्र रहा होगा, अपनी कल्पना से लिखिए।

हल

कैप्टन के बारे में सुनकर हालदार साहब के मन में जो चित्र बना होगा, वह कुछ इस प्रकार रहा होगा —
पानवाले ने बताया था — 'कैप्टन चश्मेवाला करता है।' — इससे हालदार साहब को लगा होगा कि 'कैप्टन' कोई पूर्व सैनिक होगा।
जब पता चला कि वह आजाद हिंद फ़ौज का भूतपूर्व सिपाही नहीं है, तो वे हैरान हुए।
परंतु 'कैप्टन' नाम सुनकर वे कल्पना करते होंगे —

1. कोई अधेड़ उम्र का, फ़ौजी-सा दिखनेवाला, कद-काठी में मजबूत व्यक्ति होगा।
2. उसके चेहरे पर देशभक्ति का तेज होगा।
3. वह एक स्थापित दुकानदार होगा जो सम्मान के साथ रहता हो।
4. वह नेताजी का कोई परिचित या प्रशंसक रहा होगा जिसे नेताजी के चश्मे की विशेष जानकारी हो।

परंतु वास्तव में वे एक बेहद बूढ़े, मरियल-से, लँगड़े, गरीब फेरीवाले को देखते हैं जिसके पास दुकान तक नहीं। इस विरोधाभास ने हालदार साहब को और अधिक चकित और प्रभावित किया।

उत्तर: हालदार साहब के मन में कैप्टन का चित्र एक मजबूत, देशभक्त पूर्व सैनिक-सा था — अधेड़ उम्र का, तेजस्वी, स्थापित दुकानदार। परंतु वास्तव में वे एक बूढ़े, लँगड़े, गरीब फेरीवाले को पाते हैं — यह विरोधाभास ही उनकी भावुकता का कारण बना।

प्रश्न 8

कस्बों, शहरों, महानगरों के चौराहों पर किसी न किसी क्षेत्र के प्रसिद्ध व्यक्ति की मूर्ति लगाने का प्रचलन-सा हो गया है — (क) इस तरह की मूर्ति लगाने के क्या उद्देश्य हो सकते हैं? (ख) आप अपने इलाके के चौराहे पर किस व्यक्ति की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे और क्यों? (ग) उस मूर्ति के प्रति आपके एवं दूसरे लोगों के क्या उत्तरदायित्व होने चाहिए?

हल

(क) मूर्ति लगाने के उद्देश्य —

1. महान व्यक्तित्वों को सम्मान देना और उनके योगदान को याद रखना।
2. आनेवाली पीढ़ियों को उनके जीवन और आदर्शों से प्रेरित करना।
3. राष्ट्रीय एकता और गौरव की भावना जागृत करना।
4. स्थानीय इतिहास और संस्कृति को जीवंत रखना।
5. नागरिकों में देशभक्ति, कर्तव्यनिष्ठा और नैतिक मूल्यों का संचार करना।

(ख) यह व्यक्तिगत उत्तर है। उदाहरण के रूप में —
हम अपने इलाके के चौराहे पर डॉ. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति स्थापित करवाना चाहेंगे।
कारण — उन्होंने संविधान निर्माण में अहम भूमिका निभाई, समाज में समानता और न्याय के लिए संघर्ष किया और वंचित वर्गों को अधिकार दिलाए।
उनका जीवन हर पीढ़ी को संघर्ष और दृढ़ निश्चय की प्रेरणा देता है।

(ग) मूर्ति के प्रति उत्तरदायित्व —

1. मूर्ति की साफ-सफाई बनाए रखना।
2. उस पर पोस्टर या विज्ञापन न चिपकाना।
3. जयंती/पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि अर्पित करना।
4. उस व्यक्ति के आदर्शों को अपने जीवन में उतारना।
5. दूसरों को भी उनके योगदान के बारे में बताना।
6. मूर्ति की टूट-फूट या क्षति न होने देना — यह हमारी साझी विरासत है।

उत्तर: (क) महान व्यक्तियों को सम्मान, पीढ़ियों को प्रेरणा, राष्ट्रभक्ति जागृत करना। (ख) व्यक्तिगत उत्तर — उदाहरण: डॉ. अंबेडकर — संविधान निर्माण और समानता के संघर्ष के कारण। (ग) मूर्ति की सफाई, सम्मान, जयंती पर श्रद्धांजलि, और उनके आदर्शों को जीवन में उतारना।

प्रश्न 9

सीमा पर तैनात फ़ौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम सभी अपने दैनिक कार्यों में किसी न किसी रूप में देश-प्रेम प्रकट करते हैं; जैसे—सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान न पहुँचाना, पर्यावरण संरक्षण आदि। अपने जीवन-जगत से जुड़े ऐसे और कार्यों का उल्लेख कीजिए और उन पर अमल भी कीजिए।

हल

देश-प्रेम केवल युद्धभूमि में नहीं, बल्कि दैनिक जीवन में भी व्यक्त होता है। निम्नलिखित कार्यों से हम देश-प्रेम का परिचय दे सकते हैं —

1. सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा — सरकारी भवनों, सड़कों, पुलों, बसों आदि को नुकसान न पहुँचाना।
2. स्वच्छता — सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा न फेंकना; गली-मोहल्ले को साफ रखने में सहयोग करना।
3. जल और ऊर्जा की बचत — नल व्यर्थ न बहाना, बिजली बचाना — राष्ट्रीय संसाधनों की रक्षा।
4. ईमानदारी से कर-भुगतान — देश के विकास के लिए कर ईमानदारी से चुकाना।
5. वृक्षारोपण — पर्यावरण सुधार के लिए पेड़ लगाना और उनकी देखभाल करना।
6. यातायात नियमों का पालन — सड़क पर नियमों का पालन करके दुर्घटनाएँ रोकना।
7. राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान — राष्ट्रध्वज, राष्ट्रगान का सम्मान।
8. भ्रष्टाचार का विरोध — किसी भी रूप में भ्रष्टाचार को बढ़ावा न देना।
9. शिक्षा के प्रति समर्पण — देश की प्रगति के लिए ज्ञान अर्जन और उसका सदुपयोग।
10. दूसरों के अधिकारों का सम्मान — सामाजिक समरसता बनाए रखना।

उत्तर: दैनिक जीवन में देश-प्रेम: सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा, स्वच्छता, जल-ऊर्जा बचत, ईमानदारी, वृक्षारोपण, यातायात नियम-पालन, राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान, भ्रष्टाचार का विरोध — ये सब देशभक्ति के व्यावहारिक रूप हैं।

प्रश्न 10

निम्नलिखित पंक्तियों में स्थानीय बोली का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, आप इन पंक्तियों को मानक हिंदी में लिखिए— कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।

हल

मूल पंक्तियाँ (स्थानीय बोली में):
'कोई गिराक आ गया समझो। उसको चौड़े चौखट चाहिए। तो कैप्टन किदर से लाएगा? तो उसको मूर्तिवाला दे दिया। उदर दूसरा बिठा दिया।'

मानक हिंदी में —
'मान लीजिए कोई ग्राहक आ गया। उसे चौड़े फ्रेमवाला चश्मा चाहिए। तो कैप्टन उसे कहाँ से लाएगा? इसलिए उसे

मूर्ति पर लगा फ्रेम दे दिया और वहाँ दूसरा फ्रेम लगा दिया।'

बोली और मानक हिंदी में अंतर:

गिराक → ग्राहक

चौखट → फ्रेम

किदर → कहाँ

उदर → वहाँ

बिठा दिया → लगा दिया

उत्तर: मानक हिंदी: 'मान लीजिए कोई ग्राहक आ गया। उसे चौड़े फ्रेमवाला चश्मा चाहिए। तो कैप्टन उसे कहाँ से लाएगा? इसलिए उसे मूर्ति पर लगा फ्रेम दे दिया और वहाँ दूसरा फ्रेम लगा दिया।' (गिराक=ग्राहक, चौखट=फ्रेम, किदर=कहाँ, उदर=वहाँ)

प्रश्न 11

'भई खूब! क्या आइडिया है।' इस वाक्य को ध्यान में रखते हुए बताइए कि एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से क्या लाभ होते हैं?

हल

एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों के आने से निम्नलिखित लाभ होते हैं —

1. भाषा की समृद्धि — नए शब्दों के आने से भाषा का शब्द-भंडार बढ़ता है। जैसे 'आइडिया' (अंग्रेजी) हिंदी में प्रचलित है और इसका हिंदी पर्याय 'विचार' उतनी सरलता से नहीं कहा जा सकता।
2. संप्रेषण में सुगमता — कभी-कभी अन्य भाषा का शब्द अधिक सटीक और स्पष्ट होता है; वह भाव को बेहतर व्यक्त करता है।
3. भाषाओं का आदान-प्रदान — दो भाषाओं के बीच सांस्कृतिक-सामाजिक संपर्क का प्रतिबिंब भाषा में दिखता है।
4. सहजता और स्वाभाविकता — बोलचाल की भाषा में विदेशी शब्दों का प्रयोग संवाद को अधिक स्वाभाविक और जीवंत बनाता है।
5. वैश्विक संपर्क — अंग्रेजी जैसी अंतरराष्ट्रीय भाषा के शब्दों का प्रयोग भाषा को समकालीन और वैश्विक बनाता है।
6. वाक्य का प्रभाव — 'भई खूब! क्या आइडिया है।' में 'आइडिया' शब्द हिंदी के 'विचार' से अधिक उत्साह और चमक लाता है।

उत्तर: एक भाषा में दूसरी भाषा के शब्दों से भाषा की समृद्धि, संप्रेषण में सुगमता, सहजता और वैश्विकता आती है। 'आइडिया' जैसे शब्द संवाद को जीवंत और प्रभावशाली बनाते हैं।

प्रश्नावली 6.3 — भाषा-अध्ययन

प्रश्न 12

निम्नलिखित वाक्यों से निपात छाँटिए और उनसे नए वाक्य बनाइए— (क) नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी। (ख) किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा। (ग) यानी चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था। (घ) हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए। (ङ) दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे।

हल

(क) वाक्य: 'नगरपालिका थी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी।'
निपात: भी
नया वाक्य: वह बीमार था, पर स्कूल भी जाता रहा।

(ख) वाक्य: 'किसी स्थानीय कलाकार को ही अवसर देने का निर्णय किया गया होगा।'
निपात: ही
नया वाक्य: इस काम को तुम ही कर सकते हो।

(ग) वाक्य: 'यानी चश्मा तो था लेकिन संगमरमर का नहीं था।'
निपात: तो
नया वाक्य: पैसे तो थे, पर खर्च करने का साहस नहीं था।

(घ) वाक्य: 'हालदार साहब अब भी नहीं समझ पाए।'
निपात: भी
नया वाक्य: इतना समझाने के बाद भी वह नहीं माना।

(ङ) वाक्य: 'दो साल तक हालदार साहब अपने काम के सिलसिले में उस कस्बे से गुजरते रहे।'
निपात: तक
नया वाक्य: वह देर रात तक पढ़ता रहा।

उत्तर: (क) भी — 'वह बीमार था, पर स्कूल भी जाता रहा।' (ख) ही — 'इस काम को तुम ही कर सकते हो।' (ग) तो — 'पैसे तो थे, पर खर्च करने का साहस नहीं था।' (घ) भी — 'इतना समझाने के बाद भी वह नहीं माना।' (ङ) तक — 'वह देर रात तक पढ़ता रहा।'

प्रश्न 13

निम्नलिखित वाक्यों को कर्मवाच्य में बदलिए— (क) वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है। (ख) पानवाला नया पान खा रहा था। (ग) पानवाले ने साफ़ बता दिया था। (घ) ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे। (ङ) नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया। (च) हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया।

हल

(क) कर्तृवाच्य: वह अपनी छोटी-सी दुकान में उपलब्ध गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट कर देता है।
कर्मवाच्य: उसके द्वारा अपनी छोटी-सी दुकान के गिने-चुने फ्रेमों में से नेताजी की मूर्ति पर फिट किया जाता है।

(ख) कर्तृवाच्य: पानवाला नया पान खा रहा था।
कर्मवाच्य: पानवाले द्वारा नया पान खाया जा रहा था।

(ग) कर्तृवाच्य: पानवाले ने साफ़ बता दिया था।
कर्मवाच्य: पानवाले द्वारा साफ़ बता दिया गया था।

(घ) कर्तृवाच्य: ड्राइवर ने जोर से ब्रेक मारे।
कर्मवाच्य: ड्राइवर द्वारा जोर से ब्रेक मारे गए।

(ङ) कर्तृवाच्य: नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया।
कर्मवाच्य: नेताजी द्वारा देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया गया।

(च) कर्तृवाच्य: हालदार साहब ने चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया।
कर्मवाच्य: हालदार साहब द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

उत्तर: (क) उसके द्वारा नेताजी की मूर्ति पर फ्रेम फिट किया जाता है। (ख) पानवाले द्वारा नया पान खाया जा रहा था। (ग) पानवाले द्वारा साफ़ बता दिया गया था। (घ) ड्राइवर द्वारा जोर से ब्रेक मारे गए। (ङ) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ त्याग दिया गया। (च) हालदार साहब द्वारा चश्मेवाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया।

प्रश्न 14

नीचे लिखे वाक्यों को भाववाच्य में बदलिए— जैसे—अब चलते हैं। → अब चला जाए। (क) माँ बैठ नहीं सकती। (ख) मैं देख नहीं सकती। (ग) चलो, अब सोते हैं। (घ) माँ रो भी नहीं सकती।

हल

भाववाच्य में वाक्य की क्रिया अकर्मक होती है और किसी असमर्थता, अनुमति या सामान्य भाव को व्यक्त करती है।

(क) कर्तृवाच्य: माँ बैठ नहीं सकती।
भाववाच्य: माँ से बैठा नहीं जाता।

(ख) कर्तृवाच्य: मैं देख नहीं सकती।
भाववाच्य: मुझसे देखा नहीं जाता।

(ग) कर्तृवाच्य: चलो, अब सोते हैं।
भाववाच्य: चलो, अब सोया जाए।

(घ) कर्तृवाच्य: माँ रो भी नहीं सकती।
भाववाच्य: माँ से रोया भी नहीं जाता।

उत्तर: (क) माँ से बैठा नहीं जाता। (ख) मुझसे देखा नहीं जाता। (ग) चलो, अब सोया जाए। (घ) माँ से रोया भी नहीं जाता।